किशोरियों की आकांक्षाओं को बढ़ावा देना

समूह शिक्षा गतिविधियों एवं खेलकूद की भूमिका

UMANG
उमंग

सार्थक नतीजे जैसे पढाई जारी रखना, बाल विवाह के दर में कमी, व श्रमिकों की भागीदारी में वृद्दि प्राप्त करने के लिए किशोर लड़कियों की शैक्षिक एवं आर्थिक आकांक्षाओं में बढ़ोत्तरी एक विकट मार्ग है।

उमंग, किशोरियों में आकांक्षाओं को बढ़ाने पर केंद्रित एक बहुआयामी, बहु–हितधारक किशोरी सशक्तिकरण कार्यक्रम है। इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन (आई.सी.आर.डब्ल्यू) द्वारा परिकल्पित तथा आई.के.इ.ए. फाउंडेशन द्वारा समर्थित इस कार्यक्रम का उद्देश्य झारखंड के गोड्डा और जमताड़ा जिलों में लड़कियों की स्कूल उपस्थिति में वृद्दि एवं बाल विवाह की दर में कमी लाना है। यह व्यक्तिगत (किशोरियों), परिवार (माता–पिता, भाई–बहन), समुदाय (पुरुष, लड़के, महिलाएं व अन्य सामुदायिक सदस्यं), तथा सिस्टम (स्कूल, स्थानीय सरकारी तंत्र, आदि) सहित कई स्तरों पर एक सामाजिक–पारिस्थितिक ढांचा एवं लिंग परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का उपयोग करता है। आई.सी.आर.डब्ल्यू. ने इस कार्यक्रम को साथी, बदलाव फाउंडेशन और पी.सी.आई. की साझेदारी तथा झारखंड सरकार के अहम सहयोग से लागू किया है।

समूह शिक्षा गतिविधि (जी.ई.ए) तथा खेलकूद उमंग कार्यक्रम के दो प्रमुख घटक हैं, जो किशोरियों को जेंडर असमानता एवं हिंसा की पहचान व उसे चुनौती देने, उच्च शिक्षा व रोजगार की आकांक्षा रख उन्हें प्राप्त करने के लिए जरुरी कौशल हासिल करने में सक्षम बनाते हैं।

कार्यक्रम डिजाइन एवं दृष्टिकोण

समूह शिक्षा गतिविधियां (जी.ई.ए) आयोजित करने के लिए जेंडर इक्विटी मोवमेंट इन स्कूल (जेम्स)., पंख, और प्लान.इट.गर्ल्स कार्यक्रमों की सीख एवं सामग्री का उपयोग करते हुए एक जेंडर और जीवन कौशल पाठ्यक्रम तैयार किया गया। इस पाठ्यक्रम में उम्र के अनुसार उपयुक्त सामग्री तथा गतिविधि–आधारित सहभागी तकनीकि का उपयोग किया गया, जिसमें मेरी पहचान, जेंडर और हिंसा, प्रभावी संचार, लक्ष्य निर्धारण तथा संसाधनशीलता जैसे विभिन्न विषयों को सम्मिलित किया गया है, ताकि चर्चा व विचार–विमर्श को प्रोत्साहन मिले, लैंगिक असमानता पर सवाल करने के तरीके खोजे जा सकें, और आकांक्षाओं को प्राप्त करने की योजना बनाई जा सके। सामुदायिक स्तर पर नियुक्त किये गये पीयर मेंटर को प्रशिक्षित किया गया ताकि वे समूह में किशोर लड़कियों के साथ संरचित सत्रों का नेतृत्व कर सत्र संचालित करें।

घरों में भ्रमण करके 10 से 18 वर्ष की उम्र की लड़कियों को नामांकित किया गया और उन्हें समुदाय–आधारित किशोर लड़कियों के समूहों में शामिल होकर जी.ई.ए. में प्रतिभाग करने के लिए आमंत्रित किया गया। लड़कियों के विकासात्मक चरणों, जरुरतों एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए 10–14 साल तथा 15–18 साल की लड़कियों के लिए अलग–अलग समूह बनाए गये व प्रत्येक समूह में आस–पड़ोस की 15–20 लड़कियां शामिल की गयी।

माता–पिता के समर्थन और लड़कियों की स्वैच्छिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए गोड्डा और जमताड़ा के 4 ब्लॉकों के 209 गांवों में माता–पिता एवं लड़कियों की सहमति ली गयी।

जी.ई.ए. सत्रों के साथ ही मैदानी खेलों के प्रभाव का फायदा लेने के लिए इससे फुटबाल कोचिंग तथा खेल सत्र भी जोड़े गए। खेलकूद सत्रों को किशोर लड़कियों के साथ मिलकर डिजाइन किया गया। इन खेलकूद गतिविधियों ने लड़कियों को सार्वजनिक स्थानों पर खुद को मुखर करने, असमान लैंगिक मानदंडों को चुनौती देने के साथ–साथ उनकी गतिशीलता एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने में एक मुख्य स्रोत के रुप में कार्य किया। लड़कियों ने अपने गांवों में खेलने के अलावा ब्लॉक एवं जिला स्तर के टूर्नामेंटों में भी भाग लिया।

जी.ई.ए. तथा खेलकूदों वाले हिस्से को लागू करने में कोविड–19 महामारी की वजह से तीन वर्षों का समय लग गया। इस अवधि के दौरान प्रत्येक जिले में किशोरी समूहों के साथ 28 जी.ई.ए. सत्र, कई फुटबॉल कोचिंग एवं अभ्यास सन्न, तथा फुटबॉल टूर्नामेंटों के एक चरण का आयोजन किया गया।

सफलताओं के साथ चुनौतियाँ

सत्रों के दौरान लड़कियों द्वारा साझा की गयी कहानियां उन कौशलों और क्षमताओं को उजागर करती हैं जिन्हें उन्होंने चुनौतियों एवं विरोध का सामना करने के लिए विकसित किया है। साथियों व शिक्षकों, दोनों के समर्थन के साथ, मुद्दों की गहरी समझ तथा वैकल्पिक संभावनाओं की खोज के साथ इन अनुभवों ने उनमें सपने देखने और अपनी आकांक्षाओं को स्पष्ट रुप से व्यक्त करने का आत्मविश्वास पैदा किया है। ऐसी ही कुछ कहानियाँ यहां प्रस्तुत हैं।

क्या लड़कियां सपने देख सकती हैं?

जब एक सोलह वर्षीय लड़की, पूजा ने लंबी चुप्पी के बाद पूछा – क्या लड़कियां सपने देख सकती हैं? मैं स्तब्ध रह गई। अब 3 साल बाद वह 10वीं कक्षा में है और आगे जाकर देश की सेवा करने के लिए एक पुलिस अधिकारी बनना चाहती है। बातचीत के दौरान उसने पहचान के तौर पर जी.ई.ए. के एक सत्र – मेरी पहचान, मेरे सपने को याद किया। उसने कहा कि इस सत्र ने उसे खुद के जीवन के कई पहलुओं को फिर से देखने व अपने माता–पिता से परे अपनी स्वयं की पहचान की खोज के लिए प्रेरित किया। उसके लिए अलग तरह से सोचना, अपने माता–पिता के साथ बातचीत के लिए एक भाषा खोजना तथा उनका समर्थन प्राप्त करना इतना आसान नहीं था। पूजा ने साझा किया कि दोस्तों (जो उसके समूह का हिस्सा थे), और साथी शिक्षकों के साथ लगातार बातचीत ने उसे उन मुद्दों पर अपने माता–पिता एवं भाई–बहनों के साथ चर्चा करने का आत्मविश्वास व स्पष्टता दी। उसके शब्दों में – 'उमंग ने मुझे ऊँचे सपने देखने व उन्हें पूरा करने के लिए काम करने हेतु प्रेरित किया'।

डॉ. नसरीन जमाल, प्रोजेक्ट प्रमुख

उमंग से जुड़ने के फायदे

''जब मुझे अपने दोस्तों से उमंग के बारे में पता चला, तो मैं भी इससे जुड़ना चाहती थी। कम से कम दोस्तों के साथ रहने को मिलेगा। मैंने अपने पिता से अनुमति मांगी, परंतु वह इच्छुक नहीं थे। उन्होंने पूछा कि उन्हें बदले में क्या मिलेगा, तो मैंने दीदी (सहकर्मी शिक्षक) से मेरे माता–पिता से बात करने का अनुरोध किया। काफी मनाने के बाद उन्होंने मुझे भाग लेने की अनुमति दी। मैंने अपने माता–पिता एवं छोटे भाई से कार्यक्रम व सत्रों के दौरान हुई हमारी चर्चाओं के बारे में बात करना शुरु कर दिया। धीरे–धीरे ही सही पर निश्चित रुप से मैंने उनमें बदलाव देखना शुरु कर दिया कि वे शादी से ज्यादा मेरी शिक्षा के बारे में बात कर रहे हैं (हंसते हुए)।...निश्चित ही फायदा...''

नेहा, उमंग प्रतिभागी, जामताड़ा ब्लॉक, जामताड़ा

फुटबॉल सिर्फ एक खेल नहीं; यह हमारी पहचान है -

मुझे फुटबॉल खेलने की प्रेरणा मेरे पिता से मिली, जो खुद भी कभी एक फुटबॉल खिलाड़ी रह चुके हैं और अब कोच हैं। लेकिन यह खेल अकेले या सिर्फ एक–दो लोगों के साथ नहीं खेला जा सकता, इसलिए मैं खेल नहीं पा रही थी। वर्ष 2020 में जब मैं उमग से जुड़ी, तो लड़कियों की एक टीम बनाई गयी, और यह पहली बार था जब मैं एक समूह में लड़कियों से मिल सकी थी। उमंग प्रोजेक्ट के तहत नियमित बैठकें आरंभ हो गयी। कुछ दिनों पश्चात जेंडर, भेदभाव एवं हिंसा जैसे मुद्दों पर चर्चा के साथ कार्यक्रम के एक भाग के रुप में फुटबॉल सत्र शुरु किया गया। हालांकि, सभी लड़कियां नहीं खेल रही थी। कुछ को अपने परिवारों से पूरा समर्थन मिल रहा था, तो वहीं कुछ माता–पिता अनुमति नहीं दे रहे थे। वे अक्सर तर्क देते थे कि फुटबॉल लड़कियों का नहीं बल्कि लड़कों का खेल है। धीरे–धीरे हम दूसरों की सोच में बदलाव लाकर उन्हें समझा पाए।

हमने नियमित रुप से खेलना शुरु कर दिया। हमें अपने खेल की बारीकियां सीखने के साथ ही कौशल को बेहतर बनाने के लिए प्रशिक्षण भी मिला। फिर हमने उमंग के जिला टूर्नामेंटों में भाग लिया तथा जिला स्तर तक पहुंच गयीं, जिसने हमें अत्यधिक प्रेरित किया। अब हम विभिन्न टूर्नामेंटों में भाग लेती हैं। हमने कई मैच जीते हैं। फुटबॉल ने हमें एक पहचान दी है और साथ ही हमारे गांव को भी – 'जहां लड़कियों की टीम खेलती है'। शुरुआत में हम लड़कों की वर्दी पहना करती थीं, लेकिन अब हमारी खुद की वर्दी है, तथा जूते उमंग टूर्नामेंट के दौरान दिए गये। मैचों में जीते गये पैसों से हम फुटबॉल खरीदती हैं, खेलने के लिए दूसरे गांवों में जाती हैं, तथा आने–जाने का खर्चा निकालती हैं।

सबसे अच्छी बात यह कि जो लोग हमें खेलने से रोकते थे, वे अब हमारे मैच देखने आते हैं।

पूर्णिमा, उमंग प्रतिभागी, नाला, जामताड़ा

कार्यक्रम का पहुँच एवं उसका प्रभाव

कार्यक्रम मॉनिटरिंग आंकड़ों के मुताबिक, लगभग 28,000 किशोर लड़कियों ने जी.ई.ए सत्रों और खेलकूद गतिविधियों में भाग लिया, जिनमें से लगभग 500 ने फुटबॉल टूर्नामेंटों में भाग लिया। इसके अतिरिक्त, कई लड़कियों ने शिक्षा एवं करियर के लक्ष्यों की पूर्ति हेतु दृढ़ संकल्प व्यक्त किया। गौरतलब है कि, 1.700 से अधिक लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अपने इलाकों से बाहर निकलीं, तथा 34 लड़कियों ने आगे की पढ़ाई हेतु झारखंड सरकार से छात्रवृत्ति प्राप्त की। कार्यक्रम की इन जानकारियों की पुष्टि मूल्यांकन परिणामों (मूल्यांकन विवरणिका देखें) द्वारा हुई। निगरानी एवं मूल्यांकन से प्राप्त अंतर्दृष्टि से पता चलता है कि लैंगिक नजरिया और जरुरी कौशल वाले सहकर्मी शिक्षकों द्वारा सुगम बनाए गए जी.ई.ए. तथा खेलकूदों के संयोजन ने किशोरियां को उनके भविष्य की कल्पना करने, सपनों एवं आकांक्षाओं की पहचान करने व उन्हें प्राप्त करने के लिए अपनी रुचि और कौशल का उपयोग करने हेतु प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम के आंकड़ों ने किशोर लड़कियों को उनकी आकांक्षाओं को साकार करने में सक्षम बनाने हेतु माता–पिता तथा समुदाय के समर्थन की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी बल दिया।

हम उमंग टीम के उन समर्पित सदस्यों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सामूहिक प्रयासों ने इस पहल को सफल बनाया; आपके अमूल्य योगदान के लिए धन्यवाद– नसरीन जमाल, शक्ति घोष, नितिन दत्ता, पारसनाथ वर्मा, बिनीत झा, त्रिलोकी नाथ, रवि वर्मा, अमाजित मुखर्जी, प्रणिता अच्युत, संदीपा फांडा और अनुराग पॉल।

प्राथमिक लेखकः नसरीन जमाल, प्रणिता अच्युत एवं अमाजित मुखर्जी

आई.सी.आर.डब्ल्यू एशिया रिजनल ऑफिस
मॉड्यूल नंबर-410, फोर्थ फ्लोर, एन.एस.आई.सी बिजनेस पार्क बिल्डिंग
ओखला इंडस्ट्रियल स्टेट, नई दिल्ली - 110020, भारत
फोनः +91-11-46643333 | फैक्सः 91-11-24635142
ईमेलः info.india@icrw.org
वेबसाइटः www.icrw.org/asia

आई.सी.आर.डब्ल्यू जामताड़ा प्रोजेक्ट ऑफिस
ग्राउंड फ्लोर, 726-ए/1 पी2, कृष्णा नगर,
मिहिजम, जामताड़ा, झारखंड - 815354